शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2014

समकालीन कथाकार मालती जोशी की कहानियों में पारिवारिक संदर्भ

चित्रा खींची (शोधार्थी)
हिन्दी विभाग,
वनस्थली विद्यापीठ
राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

समकालीन कहानीकारों में मालती जोशी का स्थान अन्यतम है। हिंदी की महिला कथाकारों में उन्होंने एक विशेष मुकाम हासिल किया है। समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार है। बदले परिवेश में आज परिवार को पुन: परिभाषित किया जा रहा है। इसके कारण परिवार के स्वरुप, आदर्श, मूल्यों, भावनाओं और विचारों आदि में परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में 'पारिवारिक सन्दर्भों पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

औद्योगिकरण एवं नगरीकरण ने मनुष्य को बाहर से ही नहीं अपितु भीतर से भी बदल डाला है। इसने सैकड़ों वर्षों से संजोये गए मूल्यों को गहराई तक प्रभावित किया है। भारत ने अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप परिवार और समाज की संरचना स्थापित की थी। यह संरचना हमारे परिवेश की उपज थी। इसकी समाज व्यवस्था के केंद्र में मनुष्य प्रमुख था, जिसके इर्द-गिर्द शेष अन्य व्यवस्थाएं थी। औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरुप भारत की समाज व्यवस्था में भी बदलाव दिखाई देने लगे। इन परिवर्तनों पर साहित्यकारों की दृष्टि गयी। उन्होंने कहानियों और उपन्यासों में इसे अपने कथ्य का विषय बनाया। इन साहित्यकारों में कथाकार मालती जोशी प्रमुख हैं। इनकी कहानियों और उपन्यासों को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि इन्होंने 'मध्यवर्गीय परिवार' को अपना केन्द्र बिन्दु माना है। स्वयं मध्यवर्गीय परिवार से होने पर इन्होंने हर छोटी-छोटी घटनाओं को अपने रचना संसार के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। किस तरह बदलते परिवेश ने भारतीय समाज में संयुक्त परिवार प्रथा को पूरी तरह से भिन्न-भिन्न कर दिया है और धीरे-धीरे एकाकी परिवार में परिवर्तित होते जा रहे हैं।

कहानियों में पारिवारिक सन्दर्भ

बढ़ते औद्योगिकरण एवं नगरीकरण ने स्त्री-पुरूष के सम्बन्धों में जो बदलाव ला दिया है। इसके कारण उनके दाम्पत्य जीवन में टूटन, बिखराव ऊब, अकेलापन आ चुका है। मालती जोशी ने अधिकतर मध्यवर्गीय नारी मन की घुटन को उजागर करने का प्रयास किया है। मध्यवर्गीय नारी को घर और बाहर दोनों की छटपटाहट, पारिवारिक समस्या और मानसिक तनावों से गुजरना पड़ता है। मालती स्वयं अपने शब्दों में कहती है ''भारतीय नारी हमेशा ही लेखकों का प्रिय विषय रहा है। मध्यम युग की नारी का इतिहास शोषण-अनाचार और अत्याचार का इतिहास है, पुरुष की पाश्विक बर्बरता की कहानी है। आधुनिक काल में चित्र कुछ बदला तो है,

शिक्षा के प्रसार ने इतना तो किया है कि नारी को अपने प्रति होने वाली अन्याय की चेतावनी दी है। अपनी पीड़ा को मुखर करने की क्षमता दी है परन्तु आज भी औरत दर्द और आँसुओं की तस्वीर है। नई चेतना ने उसके मानसिक क्षितिज को विस्तार दिया है, पर उसके पैर अब भी रसोई की चौखट में कैद है। उसकी आकांक्षाओं को पंख तो मिल गए हैं, परन्तु परिवार की लक्ष्मण रेखा अब भी उसके मार्ग अवरूद्ध किए हुए है। मजबूरी में ही सही हमने बेटी की, बहू की कमाई खाना शुरू किया था, पर अब तो उसका स्वाद ऐसा लग गया है कि हम अपने स्वार्थ के आगे उसकी सुख-सुविधा आशा-आकांक्षाओं को भी भूल गए हैं। वह हमारे लिए पैसा कमाने वाली मशीन भर बनकर रह गई है। उसकी कमाई पर हमारा हक है, पर उसके अधिकारों को लेकर हम अब भी मध्य युग की नीतियाँ अपना रहे हैं। मैंने समाज में व्याप्त इन्हीं विसंगतियों को अपनी कहानियों में पिरोने का प्रयत्न किया है।''

मालती जी ने अपनी कहानी, उपन्यासों को केवल कल्पनाओं से नहीं बल्कि यथार्थ के ताने-बाने में पिरोया है। उनकी कहानियाँ - 'पया पीर न जानी', 'बोल री कठपुतली', 'ये तेरा घर ये मेरा घर', 'बाबुल का घर', 'मन न भये दस बीस', 'महकते रिश्ते', 'रहिमन धागा प्रेम का', 'दर्द का रिश्ता', 'मध्यान्तर', 'एक ओर देवदास', 'औरत एक रात' आदि अनेक कहानियाँ हैं।

स्वयं मध्यवर्गीय परिवार से होने पर उनकी दुनिया केवल 'परिवार' तक ही सीमित रही। इसलिए अधिकांश कहानियों का परिवेश संयुक्त परिवार को ही चुना, जिसके कारण उनकी अधिकतर कहानियाँ पारिवारिक समस्याओं को उजागर करती हैं। जब हम उनकी कहानियों में सामाजिक यथार्थ पर गौर करते हैं तब वास्तव में पता लगता है कि उन्होंने पारिवारिक समस्याओं के यथार्थ को केन्द्रित किया है तथा नारी जीवन के विविध रूप को चित्रित किया है।

'बोल री कठपुतली' कहानी की नौकरीपेशा पत्नी आभा की आशाओं, आकांक्षाओं को जब उपेक्षित किया जाता है। तब वह अपने पति से कहती है ''अमित तुमने मुझे कोई चाबी का खिलौना समझ रखा है। कोई मोम की गुड़िया हूँ मैं ? क्या मेरी कोई आशा, कोई आकांक्षा नहीं।'' नारी भी अन्य की तरह एक स्वतंत्र और स्वायत्त जीवी है। उसे भी स्वतंत्रतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने का अधिकार है। तब वह कहती है कि ''आप जाने कि मेरा यह शरीर यन्त्रचलित नहीं है। इसके अन्दर एक मन भी है - मन जो सुख-दुःख की परिभाषा जानता है, समझता है।'' नारी कमाने मात्र की मशीन नहीं है। अपितु भावनात्मक दृष्टि से सम्बन्धों का निर्वाह करती हुई सम्पूर्ण जीवन जीने की इच्छा में परिस्थितियों के फलस्वरूप बाहर से टूटती हुई गहन वेदना में खण्डित व्यक्तित्व जीने के लिए विवश होती है। 'कुहासे' कहानी की नायिका हमेशा ही कर्त्तव्य पथ पर चलते हुए भी गहन निराशा, कुण्ठा से घिर कर वर्तमान परिस्थितियों से विवश होकर स्वयं से टकरा कर लड़खड़ा जाती है और उसका भविष्य 'कुहासे' की भाँति धूमिल हो जाता है। बदलते युग ने आज दाम्पत्य जीवन को पूरी तरह तार-तार कर दिया है। यदि पति अच्छा न मिले तो ससुराल और पीहर दोनों ही जगह उसे अपमानित होना पड़ता है।

'एक घर सपनों का' कहानी में दुःखद दाम्पत्य जीवन को स्पष्ट किया गया है। पति द्वारा तिरस्कृत होने के कारण अम्मा अपनी गृहस्थी न

बसा पाई, अधिकतर समय अपने भाई-भाभियों के पास ही काटा जब भी वहाँ से अपमानित होती तो अपने पति के घर चली जाती वहाँ भी ज्यादा दिन टिकना सम्भव नहीं हो पाता। ''पति से तिरस्कृत नारी की हर जगह दुर्गति होती है। चाहे ससुराल में हो, चाहे पीहर में, वह तो बिना पैंदे की लुटिया होती है। जिधर चाहा लुढका दिया बिना पैसे की नौकरानी होती है। जब चाहा जैसा चाहा काम लिया और बस छुट्टी।'' नारी आज भी किसी न किसी तरह शोषित होती आई है। अपनों से प्यार के बदले उसे सदैव, दुःख, पीड़ा ही प्राप्त हुई है।

मालती जोशी ने मध्यवर्गीय द्वन्द्वात्मक सम्बन्धों को 'दूसरी दुनियाँ' कहानी में व्यक्त किया है। आर्थिक अभावों से ग्रस्त सुषमा अनेक मानसिक उद्वेगों को उभारती है। आर्थिक अभाव के कारण परिवार के सभी सदस्यों की मानसिकता उसके प्रति पूरी तरह बदल जाती है। वह समर्थ होकर भी अपमानजनक जीवन जीने के लिए विवश हो जाती है। सुषमा उच्च शिक्षित होने के बावजूद दहेज के अभाव में सुयोग्य एवं मनपंसद दुल्हे का चुनाव नहीं कर पाती है अर्थात् उसे कम शिक्षित लड़के से ब्याह करना पड़ता है। लेखिका ने यहाँ दहेज समस्या के कारण मध्यवर्गीय परिवार की समस्या को दृष्टिगत करने का प्रयास किया है।

आधुनिक युग में महानगरीय परिवेश में व्यक्ति को ऐसी अंधी दौड़ में डाल दिया है परिणामस्वरूप वह अपने घर, परिवार, सबको रौंदता हुआ पदोन्नति प्राप्त करना चाहता है। 'सन्दर्भहीन' कहानी की शोभा को उसका पति सीढ़ी के रूप में प्रयोग में लेना चाहता है। किंतु पति के प्रस्ताव का विरोध करने पर शोभा दोहरी दण्ड यातना पाती है। शोभा का पति अन्य तरीके से उससे प्रतिशोध लेता है। वह शोभा के प्रति अपने बच्चों के मन में चरित्रहीनता के लांछन का विष घोलता है। जिसके कारण शोभा अपने पति, परिवार तथा बच्चों से सदैव के लिए कट जाती है। आधुनिकता की इस अंधी दौड़ ने दाम्पत्य जीवन के समस्त रस को समाप्त करने की कोशिश की है।

मालती जी ने दूसरी तरफ बताया है कि विवाह के बाद पति-पत्नी में परस्पर विश्वास और आत्मीयता सुखद दाम्पत्य जीवन का आधार स्तम्भ है परन्तु दोनों के अभाव में दाम्पत्य जीवन सफल नहीं हो पाता है। यदि दोनों के जीवन में शंका का कीड़ा प्रवेश कर जाये तो सम्बन्धों में तनाव उत्पन्न कर देता है। 'हम को दिया परदेस' कहानी में पति द्वारा शंका करने पर दोनों के दाम्पत्य जीवन में दूरी बनने लगती है। कुसुम के घर से आने वाले हर पत्र के प्रति उसका पति सशंकित एवं चैकस रहने लगता है। उसके पति के ''मन में यह बात बैठ गई थी कि तैंतीस-चैतीस वर्ष की अनब्याही रहने वाली महिला मन से तो कुंआरी रह ही सकती है,'' पति द्वारा इस तरह संदेह करने पर दोनों के सम्बन्धों में भावनात्मक दूरी उभरने लगी। 'प्रतिरोध' कहानी सुयश व मीरा के सुखद दाम्पत्य जीवन में शक प्रवेश मात्र से दोनों के सम्बन्धों में पूरी तरह से दूरी आने लगती है। मीरा के नंदोई की छेड़छाड़ के कारण उसका समस्त जीवन दुःखमय हो जाता है। इस तरह मालती जोशी ने अपनी कहानियों के माध्यम से जीवन की हर छोटी-छोटी समस्या को स्पष्ट करने का प्रयास किया।

मध्यवर्गीय दाम्पत्य प्रेम के स्वरूप को 'प्यार के दो पल' कहानी के माध्यम से मालती जी ने व्यक्त किया है। एक छोटा-सा घर, इसमें जान छिड़कने वाला पति और एक प्यारा सा बच्चा। एक सुखद दाम्पत्य जीवन के लिए इन सभी को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते हुए औरत को अपने जीवन में इससे ज्यादा कुछ भी दरकार नहीं होती।

इस तरह मालती जोशी ने समकालीन स्थितियों के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न समस्याओं से अपनी कहानियों में अंकित किया है, दहेज समस्या, अनमेल विवाह, विधवा विवाह, आर्थिक निर्भरता आदि। आर्थिक स्वतन्त्रता के आधार पर इनकी रचनाओं में मध्यवर्गीय नारी पात्रों का चित्रण अधिक हुआ है। जिसमें कामकाजी एवं घरेलू दोनों ही प्रकार की नारियाँ हैं एवं सामाजिक आधार पर नारी के विभिन्न परम्परागत रूप (पुत्री, माँ, पत्नी, बहन आदि) संदर्भों एवं स्थितियों मे चित्रित हुए हैं।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मालती जोशी ने अपने साहित्य के द्वारा अनुभव कराया है कि नगरों में रहने वाले लोगों का यांत्रिक जीवन आज कैसे उन्हें अपनों के प्रति निर्मम व कठोर, बनाता जा रहा है बल्कि संयुक्त परिवर के दायरे से निकल कर वह ईर्ष्या, द्वेष, हिंसा और अलगाव के अंतर्गत अपने आपको धकेल रहा है। मालती जोशी के रचना संसार में निहित दाम्पत्य जीवन में टूटन, बिखराव, जुड़ते-बिखरते सम्बन्ध तथा उनमें ऊब, अकेलापन, घुटन तथा अलगाव स्पष्ट दिखाई देता है। तथा परिवारों के अस्तित्व से परिचय कराना उनके प्रमुख उद्देश्य के रूप में स्पष्ट होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 समकालीन कहानीकार सामाजिक एवं सांस्कृति परिवर्तन की भूमिका: खेमसिंह डहेरिया, प्रतिभा प्रकाशन, संस्करण-2013, पृ.सं. 168,

2 बोल री कठपुतली कहानी: मालती जोशी, किताबघर प्रकाशन, संस्करण-2011 पृ.सं. 40

3 वही, पृ.सं. 48

4 एक घर सपनों का मालती जोशी:साक्षी प्रकाशन, संस्करण-2010, पृ.सं. 28

5 हमको दिया परदेस कहानी: मालती जोशी, किताबघर प्रकाशन, संस्करण- 2010 पृ.सं. 45